11 प्रदूषित जल और स्वास्थ्य

- परिचयात्मक प्रश्न - स्वच्छ जल में गंदगी मिले को कोई पी सकता है?
  - क्या गंदे जल से घर के अनेक कार्य किए जा सकते हैं?
  - क्या गंदा जल पीकर हम बीमार हो जाएँगे?
  - क्या किसी को गंदे जल का सेवन करना चाहिए?
- प्रतिबिंब - बालकों को दूषित जल, व जल प्रदूषण के प्रति सचेत करना।
- परिकल्पना - क्या आपको पता है किन क्रियाओं के द्वारा जल प्रदूषित किया जा रहा है?

दिनेश गाँव में रहता है। उसके गाँव के समीप एक नदी बहती है। एक दिन वह अपने चाचाजी के साथ सैर को निकला तो नदी तट पर गया। उसने देखा कि नदी का पानी बहुत गंदा व कीचड़ भरा था। दिनेश ने चाचाजी से पूछा कि नदी का पानी तो बहुत गंदा और कीचड़ भरा है। चाचाजी ने उसे बताया कि नदी में नगरों का दूषित जल व कारखानों के रसायन बहाए जाते हैं, जिससे पानी बुरी तरह प्रदूषित हो गया है। इस नदी में अब मछलियाँ भी नहीं पाई जाती। दिनेश जल के महत्व से परिचित है और इसके प्रदूषण से चिंतित भी। वह समय मिलने पर नदी घाट पर आ जाता है और जीवनदायी जल को काले प्रदूषित रूप में देखकर विचारता है कि क्यों लोग प्राण देने वाले अमृत को विष में बदल रहे हैं।

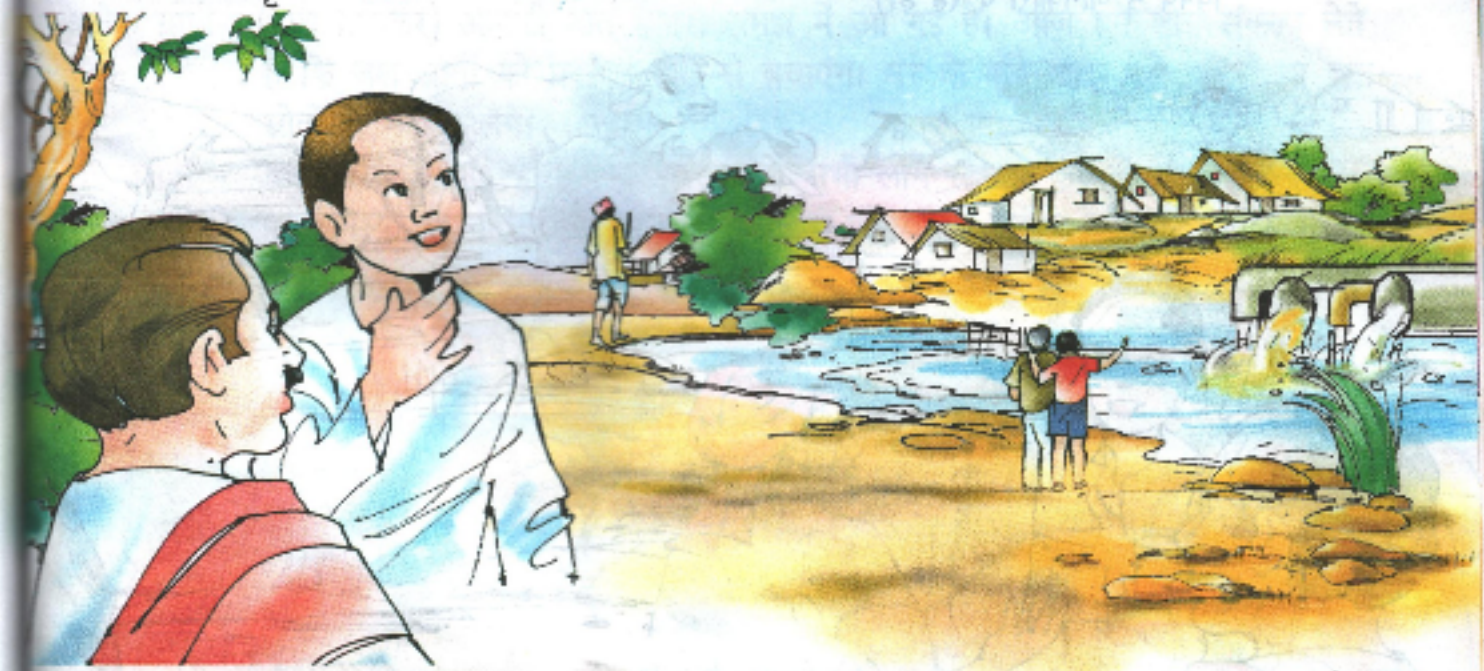

दिनेश केवल इस विषय में चिंतित ही नहीं हैं, वह नदी घाट को स्वच्छ बने रहने व गाँव से नदी को होने वाले प्रदूषण के प्रति भी सचेत रहता है।

अचानक वह देखता है कि सरबजीत अपनी भैंसे लेकर दूसरे घाट से नदी में प्रवेश कर रहा है। वे नदी में लेट जाती हैं। दिनेश तेजी से वहाँ जाता है।

दिनेश - यह क्या कर रहे हो चाचा?

सरबजीत - बेटा, भैंसों को बहुत गर्मी सता रही थी, सोचा नदी में नहला दूँ।

दिनेश - परंतु चाचा, यह तो सोचो कि इससे नदी का पानी कितना गंदा हो जाएगा।

सरबजीत - अरे बेटा, पानी तो बहता रहता है। भला इसमें गंदगी रुकी रहेगी क्या?

दिनेश - चाचा, हम लोग यही सोचते रहते हैं और जल-स्रोतों को प्रदूषित करते रहते हैं। हमसे पहले पड़ने वाले गाँव-नगरों के लोग भी यही सोचकर इसमें हानिकारक पदार्थ बहाते हैं। कारखानों के जहरीले रसायन और नगरों का दूषित जल लेकर जब नदी हमारे गाँव तक आती है, इसका जल भूमिगत होकर हमारे कुँओं और नलकों तक पहुँचता है। ऐसा जहरीला जल पीने से गाँव के लोग बीमार हो रहे हैं। बात यह नहीं कि तुम्हारे करने से यह सब होगा या नहीं होगा, परंतु ऐसा न करके तुम इसे गंदा करने में अपना योगदान देने से तो बचोगे। इसी प्रकार जब बड़ी संख्या में लोग जल-स्रोतों के प्रति सचेत होंगे, तभी तो नदियाँ प्रदूषण से मुक्त रह सकेंगी।

(सरबजीत की समझ में बात आ जाती है और वह भैंसों को नदी से बाहर निकालता है। भैंसें नदी में गोबर करती हुई बाहर निकल जाती है। भैंसों को नदी में गोबर करते देखकर दिनेश का मन दुखी होता है। वह गाँव को लौटता है तो पाता है कि चौपाल पर भीड़ लगी है। वह जिज्ञासा-वश वहाँ जाकर पाता है कि नगर से कोई समाजसेवी आए हैं जो ग्रामीणों को जल-प्रदूषण के विषय में जानकारी दे रहे हैं।)

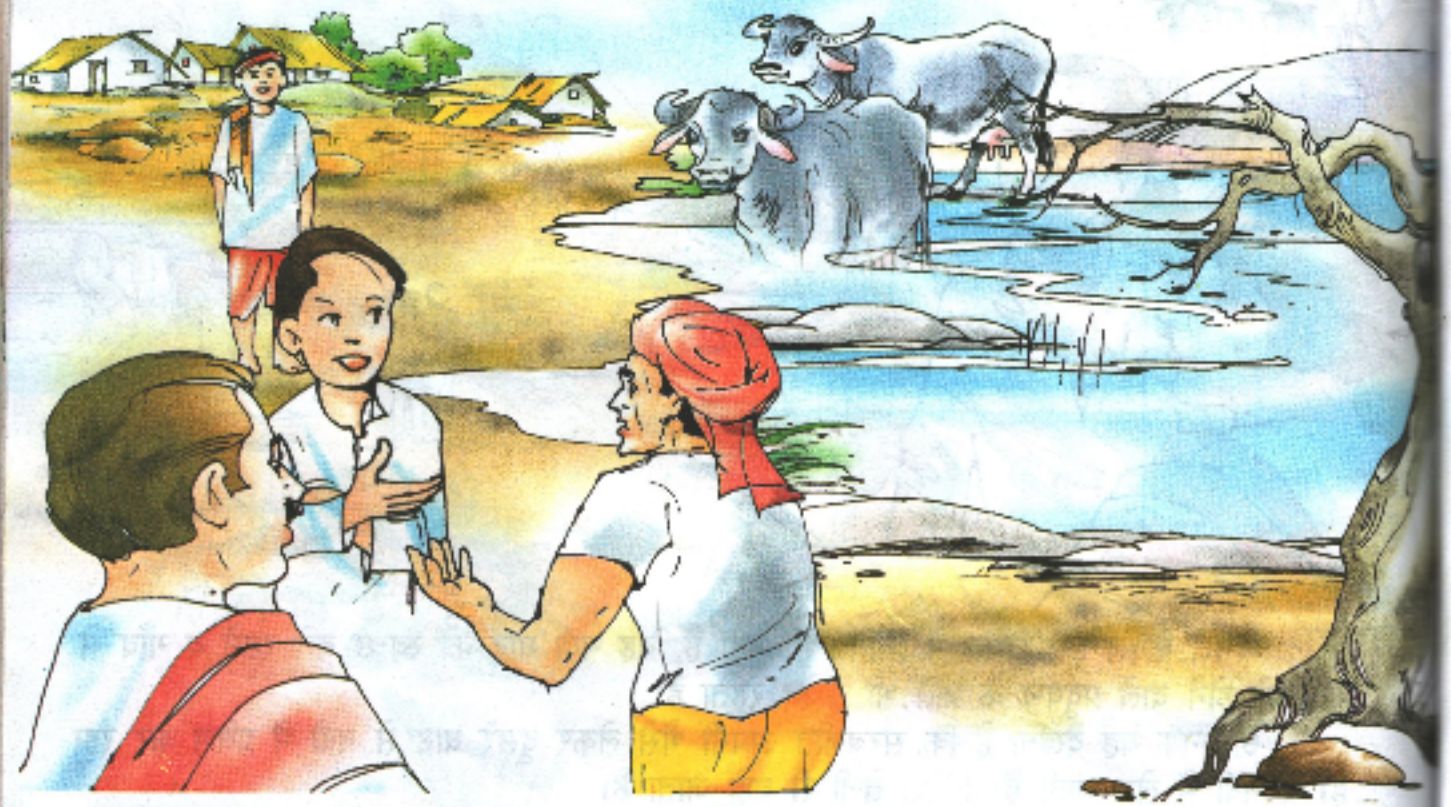

समाजसेवी - इस समय संपूर्ण विश्व विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से प्रभावित हो रहा है। आपका यह गाँव भी इसमें से एक है। लोग जल स्रोतों के प्रति बहुत बुरा व्यवहार कर रहे हैं। वे उनमें जाने-अनजाने स्वयं गंदगी डालते हैं, उसे प्रदूषित करते हैं और फिर उससे होने वाले दुष्परिणामों से बेहाल होते हैं।

एक ग्रामीण- परंतु हम किस प्रकार जल प्रदूषित कर रहे हैं? हम तो केवल इसके दुष्परिणाम झेल रहे हैं।

समाजसेवी - देखिए, यह एक आदमी का काम नहीं होता। जो व्यक्ति पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील हैं, वही प्रदूषण फैला रहे हैं, और ऐसे लोग लाखों-करोड़ों में है। हम लोग नदी, तालाबों में नहाते हैं, कपड़े धोते हैं, पशुओं को नहलाते हैं, शवों की राख डालते हैं, घरों की सड़ी-गली गंदगी डालते हैं, इससे नदियों का पानी प्रदूषित होकर विषैला हो जाता है। इसके अतिरिक्त नगरों में कारखानों के दूषित जल व नगरों की समस्त गंदगी को नदियों में बहा दिया जाता है। इससे जल प्रदूषित हो जाता है।

दूसरा ग्रामीण- क्या इस जल से लोगों को कोई हानि होती हैं?

समाजसेवी - हाँ। इस प्रदूषित जल के पीने से तरह-तरह के रोगः हैजा, पेचिश, पीलिया आदि फैलते हैं। यदि समय रहते हमने इस पर नियंत्रण नहीं पाया, तो सारा संसार हाहाकार करने लगेगा। क्या मेरी बात समझ पाए आप लोग?

अनेक ग्रामीण-(हाथ उठाकर) आपकी बात हमारी समझ में आ गई है। आज हम लोग संकल्प लेते हैं कि जल-स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाएंगे। घर के कूड़े-कचरे को नदियों या जल स्रोतों में नहीं डालेंगे।

समाजसेवी - बहुत अच्छा। यदि इसी प्रकार संसार के सभी लोग संकल्प कर लें तो जल-प्रदूषण की समस्या ही नहीं रहेगी और सभी स्वस्थ जीवन जी सकेंगे।

शब्दार्थ

समीप = नजदीक। प्रदूषित = विरोधी प्रकृति की वस्तु मिल जाने से दूषित या दोषयुक्त। परिचित = जानकार। प्रदूषण = दोषयुक्त या दूषित हो जाना। जीवनदायी = जीवन देने वाली। विष = जहर। सचेत = जो चित्त को जगाकर रखे। जिज्ञासावश = जानने की इच्छा लेकर। दुष्परिणाम = जिनके परिणाम बुरे होते हैं। अतिरिक्त = अलावा। नियंत्रण = काबू।

अभ्यास-कार्य

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. दिनेश सैर करने गया था अपने-
   (अ) दादाजी के साथ (ब) चाचाजी के साथ ✓ (स) भाई के साथ
2. स्वच्छ जल को माना जाता है-
   (अ) रसायन (ब) अमृत ✓ (स) नदी का जल
3. दिनेश चिंतित है जल के-
   (अ) बहने से (ब) गिरने से (स) प्रदूषित होने से ✓
4. जहरीला जल पीने से लोगों का-
   (अ) स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। ✓ (ब) मन दुखी होता है (स) संबंध खराब होता है
5. जल-स्रोतों के प्रति सचेत होने से-
   (अ) जल-प्रदूषण कम होगा ✓ (ब) जल-प्रदूषण नहीं होगा (स) जल-प्रदूषण होता रहेगा।

(ख) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. नगरों का दूषित जल	(अ) भीड़ लगी थी।
2. प्रदूषण जल रूपी अमृत को	(ब) जल-प्रदूषण की जानकारी दे रहे हैं।
3. जहरीला जल पीने से	(स) नदियों में बहाया जाता है।
4. चौपाल पर	(द) विष में बदल रहा है।
5. समाजसेवी ग्रामीणों को	(य) गाँव के लोग बीमार हो रहे हैं।

(ग) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. वर्तमान में नदियों का जल मानवीय क्रियाकलापों से दूषित हो गया है। (स्वच्छ/दूषि
2. दिनेश नदी के प्रदूषित हो जाने से चिंतित है। (चिंतित नहीं है/चिंतित है
3. दूषित नदी में मछलियाँ मर जाती है। (स्वच्छ/दूषि
4. अधिकतर लोग पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील है। (संवेदनशील/असंवेदनशील

शुद्ध उच्चारण कीजिए:

प्रदूषित | दुष्परिणाम | जीवनदायी | जिज्ञासावश | नियंत्रण

इनके उत्तर लिखिए:

1. दिनेश के गाँव में लोग किस कारण बीमार थे?
दिनेश के गांव में लोग प्रदूषित जल के लगातार सेवन के कारण बीमार थे।

2. दिनेश मन में क्या विचार करता था?
दिनेश मन में जल प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने का विचार करता था।

3. दिनेश के प्रश्न करने पर कि भैंस पानी को गंदा करेंगी, सरबजीत ने क्या कहा?
सरबजीत ने दिनेश के प्रश्न करने पर कहा कि पानी तो लगातार बहता रहता है, इसमें गंदगी रुकेगी रहेगी क्या।

4. समाजसेवी ने गाँव वालों को जल प्रदूषण के प्रति क्या समझाया?
समाजसेवी ने गांव वालों को समझाया कि नदी के पानी में गंदगी फैलाने से क्या दुष्परिणाम होता है। गांव वालों ने जल प्रदूषित होने से बचाने का संकल्प लिया।

5. ग्रामीणों ने क्या संकल्प लिया?
ग्रामीणों ने जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाने का संकल्प लिया।

भाषा की बात

(क) उपयुक्त विराम-चिन्ह लगाइए:

1. पहले सोचो फिर बोलो — पहले सोचो, फिर बोलो!
2. अब क्या करोगे — अब क्या करोगे?
3. वाह क्या बात है — वाह! क्या बात है!
4. अहंकार मत करो — अहंकार मत करो!
5. क्या तुम्हें गर्मी सता रही है — क्या तुम्हें गर्मी सता रही है?

(ख) 'कर' जोडकर नए शब्द बनाइए:

1. बैठ बैठकर 2. देख देखकर 3. सोच सोचकर 4. चल चलकर
5. तैर तैरकर 6. पढ़ पढ़कर 7. झुक झुककर 8. सो सोकर

(ग) इनके तीन-तीन पर्यायवाची लिखिए:

1. नदी सरिता तनूजा सरि
2. मछली मत्स्य मीन मकर
3. जल पानी नीर वारि

(घ) समानार्थी शब्द लिखिए:

1. परिचित जानकार 2. समीप नजदीक 3. विष जहर
4. स्वच्छ साफ 5. नियंत्रण काबू 6. अतिरिक्त अलावा

(ङ) इन वाक्यों की क्रियाओं के काल लिखिए:

1. नदी बह रही है। वर्तमान काल
2. शेर ने हिरन का पीछा किया। भूतकाल
3. क्या कर रहे हो। वर्तमान काल
4. ऑफिस कब जाओगे? भविष्य काल
5. मीरा ने निबंध लिखा। भूतकाल

कुछ करने की बात

(क) अपने नगर के जल स्रोतों का अवलोकन कीजिए। क्या वहाँ जल-प्रदूषण हो रहा है? यह किस प्रकार हो रहा है तथा प्रत्यक्ष रूप से वहाँ का वातावरण कैसा बन पड़ा हैं? लिखिए।

(ख) प्रदूषित जल की जानकारी पाकर आप इसके प्रयोग के प्रति क्या सावधानियाँ अपनाते हैं?

(ग) जल-प्रदूषण से होने वाली हानियों से कक्षा को परिचित करवाइए।